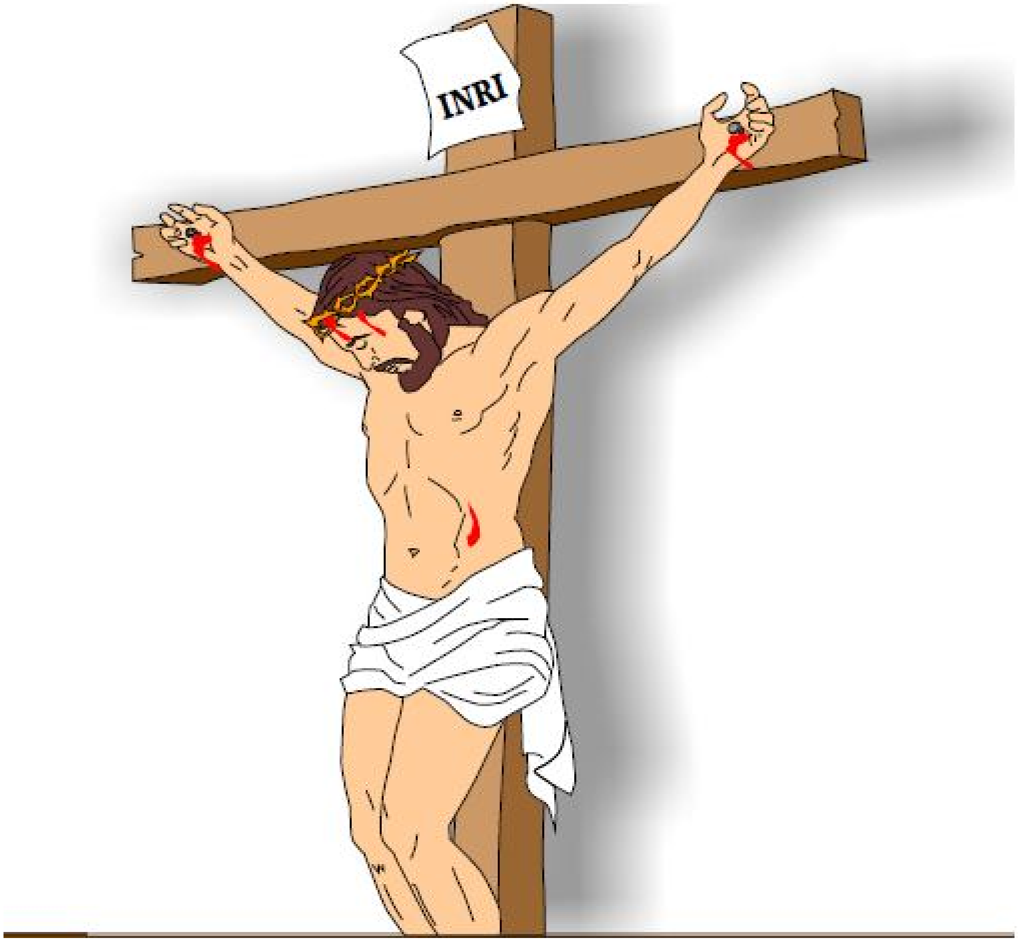
INRI

RELIGIONS BREAKUP OF WORLD

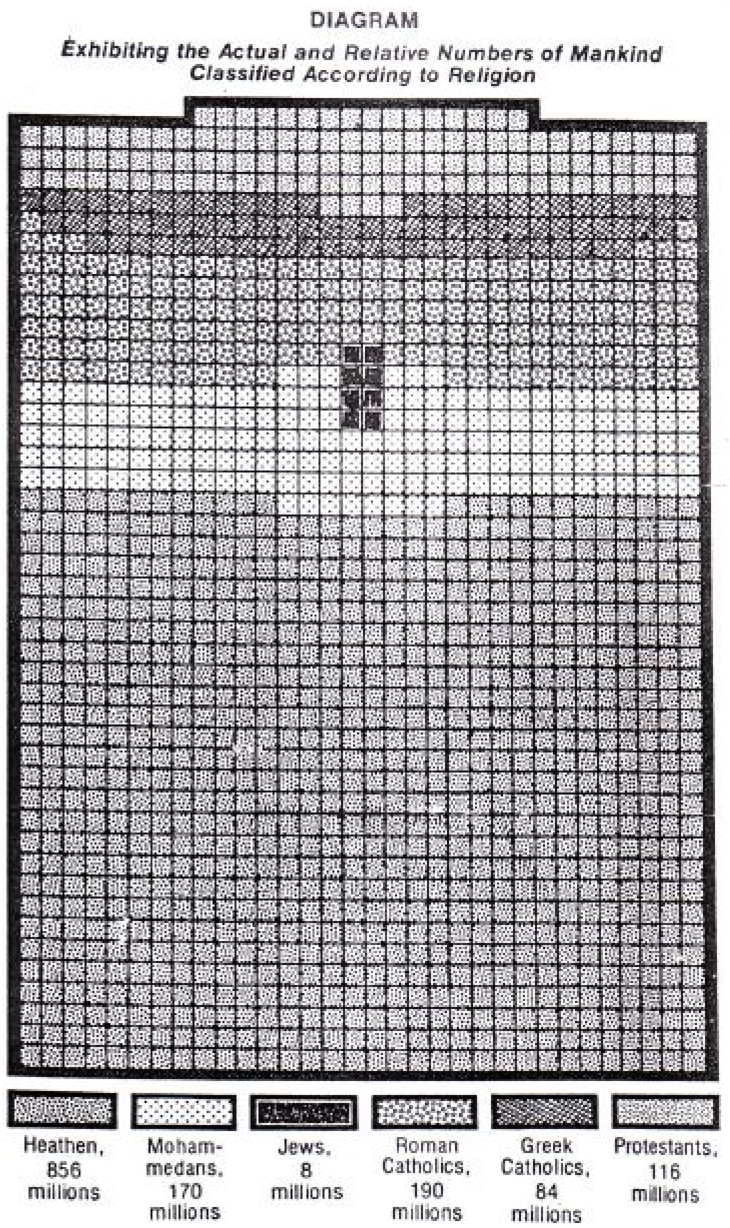

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

आज हम अपने **प्रभु के क्रूस** की और देखेंगें या पढेंगें!

क्रूस पर की मृत्यु के द्वारा हमारे प्रभु पूरी **दुनिया के लिए उद्धारकर्ता बन गए।**

लेकिन प्रभु यीशु ने क्या केवल ईसाईयों को बचाया या फिर पूरी मानवजाति को?

इस प्रशन का उत्तर बहुत ही **भरमाने वाला** और अनिश्चित है क्योंकि हमे बहुत सारे अलग-अलग उत्तर मिलेंगें ।

लेकिन इस प्रशन का सही उत्तर क्या है?

सच्चाई क्या है?

"क्रूस के रहस्य" की पढाई के अन्दर इस **सवाल** का जवाब छिपा हुआ है।

क्या आपने कभी इसके बारे में सुना है ?

ये हमे निम्नलिखित वचन में मिलता है -

यूहन्ना12:32 "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा"।

इसका क्या मतलब है?

यहाँ पर ध्यान दें कि **सभी मनुष्य** को यीशु अपने पास खिचेंगें!

ये **"सब को"** यानि सब मनुष्य कौन हैं?

क्या ये केवल ईसाईयों के बारे में है...?

...या **पूरी** मानवजाती के बारे में?

और "**सब को अपने पास खींचूँगा**" का मतलब, क्या हम स्वर्ग में जाने से <u>सम्बन्धित</u> समझें?

क्या यहाँ पर **यीशु** ये कह रहें हैं की वे **सब** मनुष्यों को स्वर्ग में खींचेंगें?

इस तरह के विचार बहुत -बहुत अनुचित होंगें !!

इसलिए यीशु के वचनों का यहाँ पर **सचमुच** में क्या मतलब है?

हम इसका वर्णन अगले वचन में देखते हैं --

यूहन्ना 12:33 "ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा"।

हाँ ! यूहन्ना 12:32 वें वचन में "पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा" वचन **क्रूस** की और संकेत कर रहा है।

जो भी क्रूस पर मरता है, उसे पृथ्वी पर से **ऊंचाई** में लटकाया जाता है–
और वह जमीन से **ऊपर** मरता है।

इसका मतलब हुआ क्रूस पर मरने के लिए प्रभु यीशु "पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाए जाएंगें"

आपने यदि यीशु मसीह पर कोई फिल्म -"पैशन ऑफ़ द क्राइस्ट" देखी होगी तो जरूर इस बात पर ध्यान दिया होगा।

☞ अब अगला सवाल ये है कि प्रभु यीशु अपने क्रूस पर मृत्यु के द्वारा **सब को** अपने पास **कैसे** खिंचेंगें?

यही क्रूस का “**रहस्य**” है जिसे हम आज पढेंगें।

आइये हम इस पाठ की **शुरुवात यीशु के जीवन के आरम्भ** में जा कर करें और उस संदेशे को देखें जो की स्वर्गदूतों ने यीशु के जन्म के समय में दिया था -

लूका 2:10 “तब स्वर्गदूत ने उन से कहा, मत डरो; क्योंकि देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं <u>जो सब लोगों के लिये होगा</u>”।

कैसे यीशु का जन्म... **सब लोगों** के लिए एक **सुसमाचार** था?

यहाँ पर "सब लोगों" का **क्या** मतलब है?

इसके उत्तर का एक हिस्सा हम निम्नलिखित वचन में देखते हैं --

मत्ती 1:21 "...तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा"।

हाँ यीशु को **उद्धारकर्ता** बनना था।

यीशु नाम का यही मतलब है ।

लेकिन किस तरह के उद्धारकर्ता?

इस वचन में "अपने लोगों" का क्या मतलब है?

... क्या वे केवल यहूदी हैं?

क्या ये लोग दुनिया की पूरी मानवजाति है **या** केवल वही है जो अभी के समय में यीशु पर विश्वास करते हैं?

इन सवालों का उत्तर किसके पास है? यीशु वास्तव में किसके लिए मरे थे?

इन सवालों का उत्तर हमे यीशु से उन्हीं के वचनों में मिलता है, जैसा की हम पढ़ते हैं -

मरकुस 10:45 "क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे"॥

हाँ! यह एक **मुख्य** वचन है जो हमे उत्तर बताता है!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

लेकिन यहाँ पर “**छुड़ौती**” शब्द का **क्या** मतलब है?

और “**बहु तों**” शब्द किन लोगों पर लागू होता है?

आइये देखें -

साधारणतय, ये शब्द “बहु तों” का उपयोग एक **बड़े समूह** को दर्शाता है लेकिन वह **बड़ा समूह “सब लोगों” की और संकेत नहीं करता**।

तब, क्या इस वचन में यीशु ने जिस “छुड़ौती” की बात की है?

वो "बहु तों" के लिए है लेकिन "सब" के लिए नहीं?

क्या यीशु (बहु तों) के लिए मरे,... लेकिन "सब" के लिए नहीं मरे?

इसलिए सम्भवतः अभी बहु त लोग ये प्रचार करते हैं कि यीशु केवल उनके लिए मरे जो उन्हें स्वीकार करके ईसाई बन जाता है। ...

...यह कि यीशु हमारे निजी **उद्धारकर्ता** बने, तो उसकी **शर्त** यह है कि हमे उन्हें **निजी तौर पर** स्वीकार करके **ईसाई** बनना होगा!

क्या "बहु तों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे" -इस वचन का मतलब यही है?

यीशु के ऐसा कहने का मतलब क्या है, इसे समझने के लिए हमें "बहु तों" शब्द का **बाईबल की भाषा** में क्या मतलब है, ये समझना पड़ेगा।

इसका मतलब हमें निम्नलिखित वचनों में मिलता है -

रोमियो 5:19 “क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहु त लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहु त लोग धर्मी ठहरेंगे”।

हाँ! यहाँ पर हम ये समझते हैं कि "बहु त लोग" का मतलब सचमुच में KJV में “**सब लोग**” है।

इसलिए यीशु की **छुड़ौती वास्तव में "सबके"** लिए है --क्योंकि **"बहुतों"** का मतलब **"सब लोग"** है।

और यह बात **फिर से ज्यादा स्पष्ट रूप** से निम्नलिखित वचनों में देखी जा सकती है -

1 तीमुथियुस 2:5,6 “क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए”।

यहाँ हमें अपने सवालों का स्पष्ट उत्तर मिल जाता है! ...**पूरी तरह से स्पष्ट है**।

एक छुड़ौती सब के लिए!

आइये अब हम ये सवाल देखें कि **"छुड़ौती"** शब्द का सच में क्या मतलब है? छुड़ौती शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के **ANTILUTRON (एंटिलयूट्रॉन)**, जिसका शाब्दिक अर्थ है -

“किसी दूसरे के बदले में छुटकारे के लिए दी जाने वाली किमत या बराबर की किमत या मूल्य”।

इस **“छुड़ौती”** शब्द का उपयोग आजकल साधारणतय पिक्चरों में होता है। जब किसी बड़े आदमी का **अपहरण** कर लिया जाता है तो उसको छुड़ाने की किमत देनी पड़ती है।

उदाहरण: राजकुमार (कन्नड़ अभिनेता) के **अपहरण का मामला** जिसे **वीरप्पन** ने सन 2000 के वर्ष में भारत देश के तमिलनाडु राज्य में अगवा कर लिया था। और अभिनेता को रुपये देकर छुड़ाया गया था।

लेकिन **असलियत** में **"छुड़ौती"** शब्द **"बराबर का और एकदम सही मूल्य है जो समतुल्य हो"** --इसका प्रतिक है।

मतलब कोई वस्तु जो 100 रुपये के योग्य हो और उसकी किमत भी 100 रपये हो तो उस वस्तु को **छुड़ाने** का मूल्य भी 100 रुपये देना होगा!

➡ 99 रुपये **छुड़ौती नहीं कहलाएगी**!

➡ 101 रुपये भी **छुड़ौती नहीं कहलाएगी**!

इसलिए "छुड़ौती" शब्द का मतलब हुआ -“किसी के **बराबर** समतुल्य कीमत”
ये बात हमारे मन में यह सवाल उत्पन्न कर देती है कि–

☞ **कैसे केवल <u>एक मनुष्य</u> यीशु मसीह, सभी मनुष्यों के लिए छुड़ौती बनें?**

मतलब, सभी के लिए "बराबर समतुल्य कीमत" कैसे बने?
बराबर की कीमत का मतलब तो यह हुआ कि वो **केवल एक** ही दूसरे मनुष्य के बदले में कीमत चुका सकते थे!

लेकिन हम यह पढ़ते हैं कि वो **पुरे** जगत के उद्धारकर्ता हैं! कैसे?

ऐसा कैसे सम्भव है?

वो पुरे जगत के उद्धारकर्ता हैं ये सच्चाई हम--

1 यूहन्ना 4:14 “और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है”।

क्या आपने देखा कि इस वचन में ये बात कितनी स्पष्ट है?

☞ तो फिर वह **एक मनुष्य** कौन है, जिसके लिए यीशु को मरना था, और जिसके द्वारा पुरे जगत की **मानवजाति--** को लाभ मिलना था?

इसका उत्तर हम वचन

प्रेरितों के काम 17:26 “उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाईं हैं” में देखते हैं–

हाँ! पूरी मानवजाति का **एक** ही मूल है और **एक** ही पिता है --आदम!

➡ हवा भी आदम में से ही आई थी।

इस प्रकार हम ये देखते हैं कि हममें से हर एक, एक - दूसरे से जुड़ा हुआ है और सबका "पूर्वज" एक ही है -आदम!

तो आदम एक **बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति** था।

☞ वो पूरी मानवजाति का **पिता** है।

☞ पूरी मानवजाति का **मुखिया** है।

☞ **पूरी** मानवजाति का **प्रतिनिधि** है।

➡ **वो मानवजाति के लिए पिता, मुखिया और प्रतिनिधि--ये सब कुछ है।**

संभवतः आदम के बारे में ठीक से समझने के लिए मुख्य बात ये है कि यदि आदम जीतता है तो मतलब पूरी मानवजाति जीत जाएगी और इसके विपरीत यदि आदम हारता है तो पूरी मानवजाति भी हार जाएगी। आदम इतना महत्वपूर्ण मनुष्य था।

☞ हम **हर एक परिवार** में **इसका उदाहरण** देख सकते हैं।

पिता आदम का चिन्ह है और माता **हवा** का चिन्ह है और **बच्चे "आदम के वंश"** का चिन्ह है। **आदम का वंश** मतलब पूरी मानवजाति।

इसलिए यदि किसी परिवार में पिता के **कार्य** और **प्रयत्न फलदायक** हों तो उनके बच्चों को भी **लाभ** होता है, लेकिन यदि फलदायक **न** हों, तो **बुरे परिणामों का प्रभाव** बच्चों पर भी पड़ता है और परिणामस्वरूप पूरे परिवार पर भी पड़ता है।

इसी प्रकार आदम के साथ भी हुआ और पूरी मानवजाति के साथ भी हुआ -- मनुष्यों का परिवार!

हाँ! आज हमें **आदम** के बारे में थोड़ा और ज्यादा पढ़ने की **जरूरत** है--

जब परमेश्वर ने उसकी रचना की तब आदम कैसा था?

आइये हम

उत्पत्ति 1:26 “फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं;”। वचन में पढ़ें --

यहाँ पर हम मनुष्य की रचना का कितना **अदभुत** विवरण देखते हैं!!

आप केवल ये कल्पना करें की आजकल लोग मनुष्य के बनाये हुए सिद्धान्तों पर भरोसा करके ये सोचते हैं कि मनुष्यों की उत्पत्ति **बन्दरों** से हुई है!

आप बाईबल के महिमामय हिसाब की लोगों में प्रसिद्ध ख़्यालों से तुलना करके देखें!

हाँ! आदम को "परमेश्वर के स्वरूप और समानता में" रचा गया था।

कहने का मतलब ये है कि-- **आदम परिपूर्ण था**, उसके पास उसके अन्दर में ही **जीवन** था और उसे कुछ **शर्तों** के अन्तर्गत अनन्त जीवन जीने का **हक़** भी दिया गया था ।

ये शर्तें क्या थी?

हम उन्हें इन वचनों में पढ़ते हैं --

उत्पत्ति 2:16,17 “और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, “तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा”॥

ये एक ऐसी आज्ञा थी जिसे मानने के लिए **आज्ञाकारिता** की आवश्यकता थी, यहाँ तक की परमेश्वर ने आदम (और हवा) को स्पष्ट रूप से सूचित कर दिया था कि आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए **दण्ड** क्या होगा, जिसे कि हम इन वचनों में पढ़ते हैं --

उत्पत्ति 2:17…“उसी दिन अवश्य मर जाएगा”॥

☞ इसलिए -- आज्ञा का उल्लंघन = पाप (1 यूहन्ना 3:4)

☞ पाप का दण्ड = मृत्यु (रोमियो 6:23)

1 यूहन्ना 3:4 “जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; ओर पाप तो व्यवस्था का विरोध है”।

रोमियो 6:23 “क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है”॥

यह सब बहुत सपष्ट था! उसके बाद क्या हुआ?

☞ क्या आप जानते हैं कि आदम और हवा ने अपना जीवन **कैसे** गुजारा होगा? उनका जीवन सबसे **आनन्दमय** और सबसे ज्यादा **आशीषित** था!

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

उन्हें कोई भी **चिन्ता नहीं** थी --न भाड़ा देने की, न कार्य करने की, न पैसों की **चिन्ता**, न कोई भविष्य का भय... **कुछ भी चिन्ता नहीं**!! **एक भी चिन्ता थी ही नहीं**!

उन्हें **जीने के लिए कोई संघर्ष ही नहीं करना था**।

भोजन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था! उन्हें केवल आगे बढ़कर भोजन को लेना होता था!

उनके भोजन में विभिन्नताएं थी, बहुत तरह की अलग -अलग खुशबु थी!

<u>आप अपनी आखों को कुछ पल के लिए बन्द करके</u> कल्पना करें कि अदन की वाटिका कैसी रही होगी!

हाँ, वहाँ पर हर प्रकार के **फलों** का भोजन था!

आजकल हम शायद ही कभी फल खाते हैं; फिर सम्भवतः जब बीमार पड़ने पर डॉक्टर कहता है तब फल खाते हैं!

और फल खाकर हमारी तबियत ठीक हो जाती है!

क्योंकि सब प्रकार के फलों में जीवन का भोजन है या फल जीवन का भोजन है!

उस समय आदम और हवा के लिए फल ही उनका भोजन था और फलों के द्वारा उनमे जीवन था।

निश्चय आदम और हवा ने बहुत से खुबसूरत पल एक दूसरे के साथ भोजन करने के बीच में बिताए होंगें।

हो सकता है **आदम ने खुद** हवा का परिचय सभी जीवित प्राणियों के नामों से कराया हो, जिनके नाम आदम ने खुद रखे थे।

उत्पत्ति 2:19,20 "और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखें, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया। सो आदम ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उससे मेल खा सके"।

वे बगीचे में एक साथ लम्बी सैर करते होंगें। किसी एक दिन हवा अकेली होगी, आदम उसके साथ **नहीं** रहा होगा।

...**और हवा क्या देखती है**?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

उसने देखा कि एक साँप -- जो कि जीवित प्राणी है, **उस वृक्ष** का फल खा रहा है, जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा दी है कि वे न खाएं।

उत्पत्ति 2:16,17 "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा"॥

और उसने सोचा, "आह! **अब** मैं देखूं की ये साँप कैसे मरता है"!
वो बैठकर देखती रही, देखती रही, देखती रही...!

...और कुछ भी नहीं हुआ!

और इस प्रकार से साँप ही था जिसने एक तरह से **हवा से बात की**!
आइए हम उनकी बातचीत का विवरण इन वचनों में देखें--

उत्पत्ति 3:1 "यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस बाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना"?

क्या साँप ने शब्दों के द्वारा अपनी जवान से बात की?

☞ **निश्चय, ऐसा नहीं है!**

यहाँ पर की **बातचीत** एक अलग ही तरह की थी!

शब्दों के द्वारा नहीं, पर क्रियाओं के द्वारा!

☞ हाँ! क्रियाएँ शब्दों से **अधिक जोर** से बोलते हैं!

इसलिए, जब साँप ने 'निषेध' पेड़ का फल खाने की क्रिया की जिसे खाने को मना किया गया था, और जब साँप उस 'निषेध' पेड़ का फल खाकर भी **नहीं मरा**, तो हवा के दिमाग में परमेश्वर की आज्ञा और नियम को लेकर **संदेह** उत्पन्न हो गया।

अपने हृदय में हवा परमेश्वर के नियमों और आज्ञा को दोहराती है -

उत्पत्ति 3:2,3 "स्त्री ने सर्प से कहा, इस बाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष बाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे"।

हाँ! हवा के मन और हृदय में परमेश्वर की आज्ञा और शर्त स्पष्ट रूप से दर्ज थी।

यहाँ तक कि उसने थोड़ा बढाकर ही कहा कि -

➡ "...और न उसको छूना..."

ये हिस्सा परमेश्वर की आज्ञा का हिस्सा **नहीं** था, जिसे हम

उत्पत्ति 2:16,17 "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है: पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा"॥

वचनों में पढ़ते हैं।

यहाँ पर यह स्पष्ट है कि उसने इस मामले को थोड़ा सा **बढ़ा चढ़ाकर** कहा था!

तब से बातों को बढ़ा चढ़ाकर कहना स्त्रियों की कमजोरी है!

इसलिए, हवा ने जो आज्ञा का उल्लंघन किया, वो साँप कि क्रिया और शैतान के सुझाव का **मेल** था जिसे हम--

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

उत्पत्ति 3:4-6 “तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखें खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे। सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उसने उस में से तोड़कर खाया; और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया”।

वचनों में पढ़ते हैं।

हाँ! यहाँ पर “**हवा** ने “साँप” के माध्यम से धोखा खाया -- **एक झूठ के कारण**!

ये पहला झूठ था!

इसलिए शैतान "झूठ का पिता" बन गया।

यूहन्ना 8:44 “तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है”।

यह एक "**सवाल**" था (उत्पत्ति 3:1) जो हवा को पाप और आज्ञा उल्लंघन की और ले गया।

ये पृथ्वी पर पूछा गया **पहला** "सवाल" था जिसे साँप ने **पूछा** था -- इसलिए प्रशनवाचन चिन्ह साँप की तरह दिखता है--

लेकिन यघपि हम उत्पत्ति 3:6 वचन में ये पढ़ते हैं कि आदम ने भी उस फल में से खाया परन्तु आदम ने हवा की तरह **धोखा** नहीं खाया था।

हम इस मामले को--

1 तीमुथियुस 2:14 “और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई”।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

वचन में पढ़ते हैं।

लेकिन यदि आदम नहीं बहकाया गया था तो फिर उसने भी उस फल में से क्यों खाया?

ये आदम का अपनी प्रिय पत्नी के प्रति **गहरा प्रेम** और **लगाव** था जिसे उसने ये ख्याल दिया कि अपनी **प्रिय पत्नी के बगैर** जीना नामुमकिन है!

इसलिए उसने वही किया जो आमतौर पे हम देखते हैं कि लोग अपनी पत्नी या पति या प्रेमी/प्रेमिका के खो जाने पर करते हैं -**आत्महत्या**!

हाँ! आदम ने **स्वेच्छा** से अपना जीवन बलिदान किया।

--मतलब उसने अपनी प्रिय पत्नी के लिए आत्महत्या कर ली!

हाँ! जब आदम ने फिर से **एकाकी** जीवन के बारे में सोचा जो कि हवा के आने से **पहले** था, और उसकी **तुलना** हवा के साथ बिताये गए जीवन के साथ की, तो उसे फिर से अकेले रहने से अच्छा ये लगा कि वो हवा के **आज्ञा उल्लंघन** और "**मृत्यु**" के पीछे **हो ले** न कि फिर से **अकेले** जिएँ।

उसके बाद क्या हुआ?

इसका उत्तर हम

रोमियो 5:12 "इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया"/sab pap mein the।

वचन में पढ़ते हैं।

हाँ! आदम **अब** मृत्युदण्ड की आज्ञा में था क्योंकि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था।

लेकिन आगे हम क्या पढ़तें हैं -

"...और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई" क्योंकि सब ने पाप किया/ sab pap mein the".

इसका क्या मतलब है कि "सब ने पाप किया"?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

क्या **सब** परिपूर्ण पैदा होते हैं और फिर आदम की तरह **अपनी इच्छा** से पाप में गिर **जाते** हैं?

नहीं! यहाँ पर मामला बिल्कुल अलग है। आइये हम--

उत्पत्ति 3:23,24 “तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की बाटिका में से निकाल दिया कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था। इसलिये आदम को उसने निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये अदन की बाटिका के पूर्व की ओर करुबों को, और चारों ओर घूमने वाली ज्वालामय तलवार को भी नियुक्त कर दिया”॥

वचनों में पढ़ें।

पाप कर चुकने के बाद और मृत्युदण्ड की आज्ञा में आने के बाद आदम और हवा को परमेश्वर ने अदन की वाटिका से **बाहर निकाल** दिया।

वे जब बाहर निकल गए तो **उसी** पाप और मृत्यदण्ड की अवस्था में थे। और उसी अवस्था में उन्होंने बच्चे पैदा करने शुरू किए और इस प्रकार उनका पहला पुत्र **कैन** हुआ **जिसके** बारे में हम

उत्पत्ति 4:1 “जब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती हो कर कैन को जन्म दिया और कहा, मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरूष पाया है”।

वचन में पढ़ते हैं।

लेकिन आदम के बच्चे परिपूर्ण अवस्था में नहीं पैदा हुए थे।

वे **उसी** पाप और मृत्युदण्ड के अन्दर पैदा हुए थे जिसमें उनके माता- पिता थे--

उन्होंने **पाप** और **मृत्युदण्ड** को अपने माता- पिता से उत्तराधिकारी में प्राप्त किया था।

इसके बारे में स्पष्ट रूप से हम पढ़ते हैं -

भजन संहिता 51:5 “देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा”॥

ये वचन **जन्म से पाप** में होने के बारे में बता रहा है --मतलब **उत्तराधिकार** में मिला पाप।

इस प्रकार से, पूरी दुनिया के सभी लोगों ने अपने पिता आदम और अपनी माता हवा से उत्तराधिकार में पाप और मृत्युदण्ड पाया है।

यदि हम इस बात को समझ जाएँ तो--

लूका 9:60 "उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना"।

वचन में प्रभु यीशु मसीह जो कहना चाहते हैं उसे भी समझ पाएँगें।

यह एक ऐसा **वचन** है जो मुस्लिमों के द्वारा लिखी गई एक पुस्तक जिसका नाम--

"बाईबल की गलतियाँ"

है, उसमें दर्ज किया गया है।

इस किताब में मुस्लिमों ने यह सवाल पूछा है कि ये कैसे सम्भव है कि एक मुर्दा दूसरे मुर्दे को **गाड़े**?

इस किताब के लेखक ने प्रभु के इस वचन का **उपहास** किया है या हँसी की है।

बहुत से ईसाई भी **भ्रमित** हैं और वे भी यही सोचते हैं कि मुस्लिम ठीक ही कह रहे हैं!

लेकिन यीशु की ये बात कहने के पीछे सही मतलब क्या था?

आह! कैसे **दो मरे** हुओं में से एक मुर्दा दूसरे मुर्दे को गाड़ सकता है?–

जब तक कि उन दो **"मरें"** हुओं में **<u>एक</u>** जीवित न हो जो कि जीवित होकर भी **मरे हुए** के समान है!

हाँ! यहाँ पर प्रभु यीशु मसीह **मृत्युदण्ड पा चुकी दुनिया** के "जीवित" लोगों की बात कर रहे थे जो परमेश्वर की नज़र में **मरे** हुए हैं--

क्योंकि उनके पास जीने का कोई हक़ ही नहीं है!

इस प्रकार से, मानवजाति के अन्दर **दो** तरह की **मौत** है -

"जीवित" मरे हुए --मतलब पूरी मानवजाति के जीवित लोग जो मृत्यदण्ड के अन्दर हैं। और धीरे - धीरे **मरण** की ओर जा रहें हैं।

"मुर्दे" मरे हुए --मतलब जिन्होनें अपनी आखरी साँस जीकर **मृत्यदण्ड** को पूरा कर लिया है और मर चुके हैं।

जिसे **मिटटी** में **लौटना** भी कहते हैं!!

इसलिए यीशु ने कहा -

"...मरे हुओं को (जीवित मरे हुए को) अपने मुर्दे (मरे हुए मुर्दे) गाड़ने दो..."

अब हम ये देखते हैं कि इस **"मरी हुई"** मानवजाति को बचाने के लिए क्या किया जा सकता है?

परमेश्वर की व्यवस्था कहती है -

निर्गमन: 21:23-25 "परन्तु यदि उसको और कुछ हानि पहुंचे, तो प्राण के बदले प्राण का, और आंख के बदले आंख का, और दांत के बदले दांत का, और हाथ के बदले हाथ का, और पांव के बदले पांव का, और दाग के बदले दाग का, और घाव के बदले घाव का, और मार के बदले मार का दण्ड हो"॥

"प्राण के बदले प्राण का",

हाँ! इसलिए पूरी मानवजाति को बचाने के लिए **एक मनुष्य** के जीवन के बलिदान या अदला-बदली की जरूरत है!

-..."(एक) प्राण के बदले (एक) प्राण"...

अब हमने बहुत से देशों में शहीदों के बारे में पढ़ा होगा जो अपने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपने जीवन को बलिदान कर देते हैं।

क्या **पूरी** मानवजाति को बचाने के लिए एक **बहुत** से नहीं मिल जायेंगें जो अपना जीवन बलिदान करने को तैयार होंगें?

निश्चय ही बहुत से मिल जायेंगें!

लेकिन आदम के वंश से उसके कोई भी बच्चे इस अदला - बदली के **योग्य नहीं** थे। क्यों? इसका उत्तर हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

भजन संहिता 49:7 "उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है; और न परमेश्वर को उसके बदले प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है",

क्या आपने देखा?
ऐसा क्यों है?

इसलिए क्योंकि आदम पाप में गिरने से **पहले** परिपूर्ण था और उसके कोई भी बच्चे आदम की परिपूर्ण अवस्था से **मेल** नहीं खाते हैं!

इसलिए आदम के वंश में से उसकी कोई सन्तान पूरी मानवजाति को छुड़ाने के लिए बलिदान देने के योग्य **नहीं** हैं!

आदम और उसके वंशों यानि पूरी मानवजाति को छुडाने के लिए एक परिपूर्ण मनुष्य की जरूरत है।

तो फिर **छुड़ौती का यह दाम** (मूल्य) चुकाने के लिए **कौन** होगा जो मानवजाति को मृत्युदण्ड से बचा सकें?

सपष्ट रूप से मानवजाति में से तो **कोई भी नहीं** हो सकता जो कि छुड़ौती का बलिदान देने के योग्य हो!

तो **कौन मदद** करेगा और मानवजाति को **बचाएगा**?

हाँ! **केवल परमेश्वर!**

और परमेश्वर मानवजाति को कैसे बचाएंगें?

हम परमेश्वर के वचन --

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

होशे 13:14 “मैं उसको अधोलोक के वश से छुड़ा लूंगा और मृत्यु से उसको छुटकारा दूंगा। हे मृत्यु, तेरी मारने की शक्ति कहां रही? हे अधोलोक, तेरी नाश करने की शक्ति कहां रहीं? मैं फिर कभी नहीं पछताऊंगा”॥ यहाँ पढ़ते हैं।

हाँ! परमेश्वर ऐसा कैसे करेंगें? स्वर्ग से एक **उद्धारकर्ता** को भेजकर जैसा कि हम पढ़ते हैं -

यूहन्ना 3:16 “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए”।

हाँ! परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र यीशु को छुड़ौती का मूल्य **बनने** के लिए दिया! अहा! क्या अब आपको इस **प्रख्यात** वचन के **पीछे की भूमिका** और गहराई से समझ में आई?

परमेश्वर का महान **प्रेम**

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा"

हम पर **उनके** एकलौते पुत्र की **छुड़ौती** या **"बराबर के समतुल्य दाम"** के द्वारा प्रगट हुआ है जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण "छुड़ौती" या "बराबर का समतुल्य दाम" है!!

लेकिन यीशु जो कि **स्वर्ग** से थे, वे आदम के बराबर या **समतुल्य** कैसे हो सकते हैं, जिसके बारे में हम पढ़ते हैं -

भजन संहिता 8:5 “क्योंकि तू ने उसको स्वर्गदूतों से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है”।

हाँ! यहाँ पर हम यह देखते हैं कि किस प्रकार मनुष्य को **स्वर्गदूतों से "थोड़ा" कम बनाया गया था!**

तो यीशु आदम के लिए **बराबर का दाम** या **छुड़ौती** कैसे हो सकते थे क्योंकि यीशु तो स्वर्ग से आए थे? और यीशु तो स्वर्गदूतों से भी **बहुत ज्यादा** ऊपर थे!

तब वे "(एक) प्राण के बदले (एक) प्राण" आदम के लिए कैसे बन सकते थे?

इसका उत्तर हम इस वचन में देखते हैं -

इब्रानियों 2:9 “पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे”।

हाँ! यीशु को आदम की तरह **परिपूर्ण मनुष्य** के रूप में बदल कर भेजा गया था! यीशु जन्म से ही "पवित्र, और निष्कपट, और निर्मल, और पापियों से अलग" थे--

इब्रानियों 7:26 “सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो”।

और इस प्रकार वह “**दूसरा आदम**” बने --**दूसरा परिपूर्ण मनुष्य**!

1 कुरिन्थियों 15:45 “ऐसा ही लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना”।

इस प्रकार से आदम के लिए बराबर का दाम का मूल्य मिला!
एक “प्राण के लिए एक प्राण” मिला!

यही छुड़ौती का सिद्धान्त है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

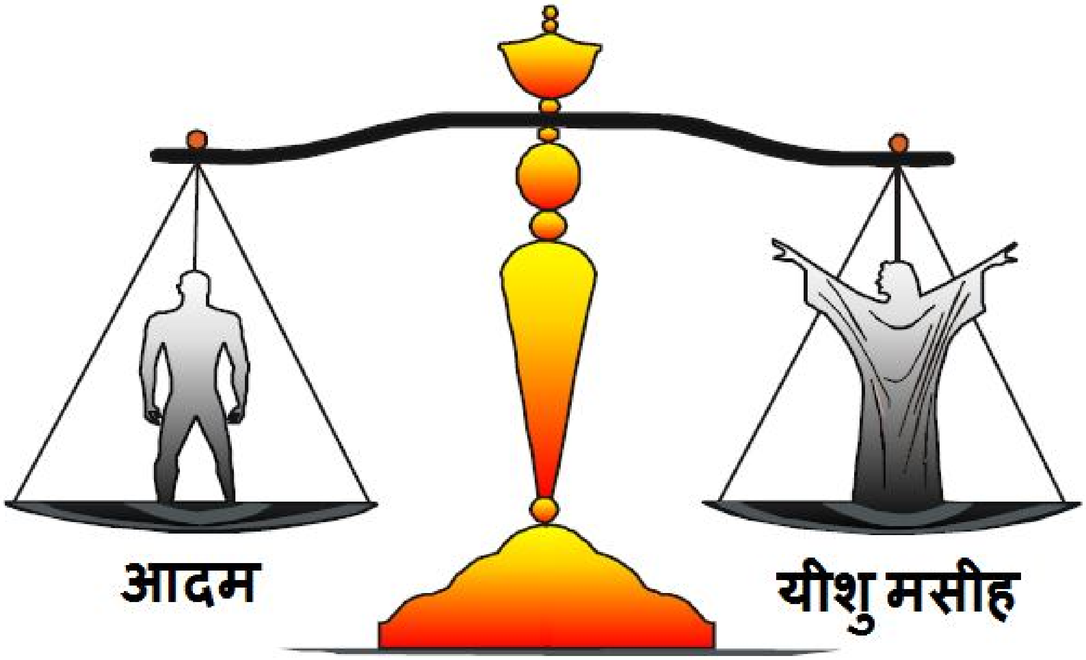

मरकुस: 10:45 “क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे”॥

इससे पहले की हम इस **छुड़ौती** के निष्कर्ष पर पहुंचें, आइए थोड़ा समय हमारे **महान उद्धारकर्ता** के और उनके बलिदान के बारे में **गहराई से** जानने में बिताएँ!

‘देहधारी” बनने से पहले यीशु कैसे थे?

इसके बारे में हम यहाँ पढ़ते हैं --

2 कुरिन्थियों 8:9 “तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ”।

“वह धनी होकर भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया”, इसका क्या मतलब है?

☞ आइए इस मामले को स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम एक उदहारण देखें --

मानलेते हैं कि परिपूर्ण आदम का अंक **100** है, फिर आदम के पाप में गिरने के तुरन्त बाद कैन और आबेल का जन्म हु आ और उनकी अवस्था को 100 से **कम** अंक देते हैं और हमारा सुझाव है कि हम उन्हें **90** और **95** अंक देते हैं।
उसके बाद से आजतक पूरी मानवजाति और ज्यादा से ज्यादा पाप में **गिरते** जा रही है और **भ्रष्ट** होते जा रही है, उस तुलना में जो आदम पाप से गिरने से पहले था।
अभी के समय में हम अवश्य **एक** से **दस** अंक के अन्दर आ गए होंगें!
कुछ लोग तो और भी ज्यादा गिर गए हैं जैसे की भिखारी लोग, शराबी लोग, जो सारे दिन पिए हु ए रहते हैं, आदि जिनका अंक **½ या ¼** भी माना जा सकता है!!
अभी यीशु की परिपूर्ण स्वर्गीय स्वाभाव वाली अवस्था की तुलना **100,000** अंक से करते हैं!!
और नीचे के चार्ट में इस मामले को समझने की चेष्टा करते हैं--

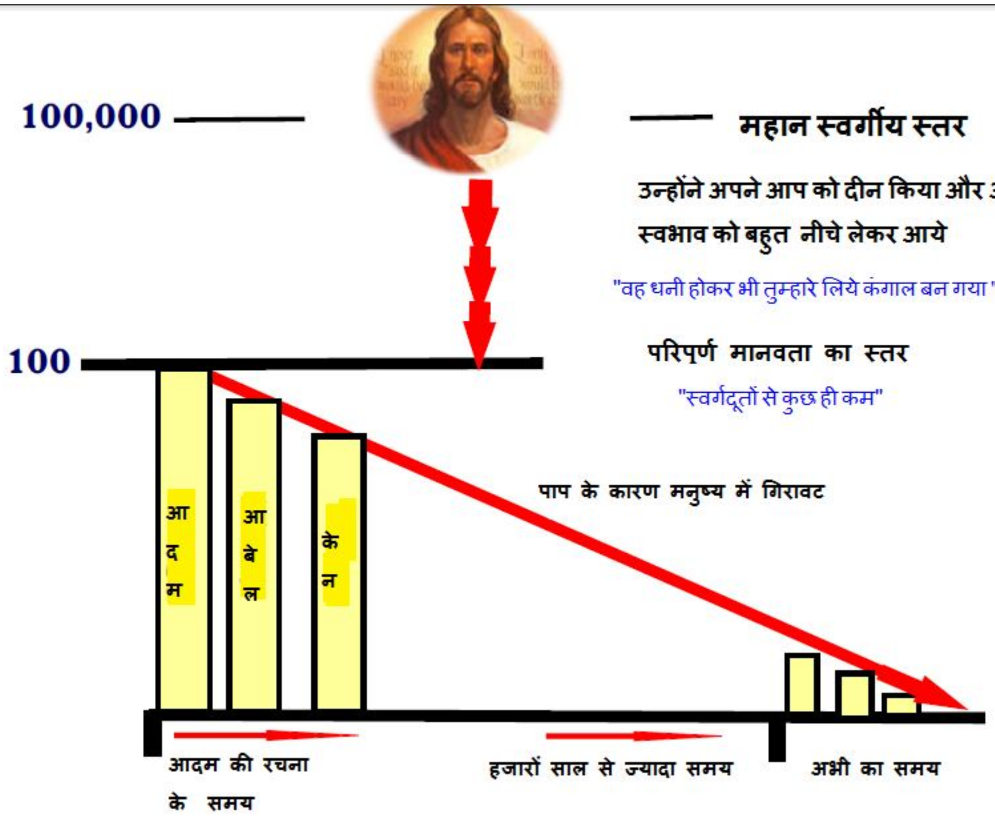

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

कल्पना करें की 100 और 100000 में कितना **अन्तर** है और हमारे स्वामी ने **छुड़ौती का दाम बनने** के लिए खुद को कितना विनम्र किया!!

हाँ! वो जीवन के ऊंचे स्तर पर **'धनी'** थे और उन्होंने खुद को नीचे के **जीवन के स्तर पर लाकर 'कंगाल'** बनाया!

और यही नहीं, हम उनके बारे में और भी कुछ इस वचन में पढ़ते हैं --

फिलिप्पियों 2:7 "वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया"।

इसका क्या मतलब है?

इस वचन की **गहराई** को हम आइये एक उदाहरण से समझने की चेष्टा करते हैं--

हम जिस दुनिया में रहते हैं वह **सचमुच में कितनी बड़ी है** और हमारे साथ-साथ कितने **अलग -अलग प्रकार के जीव-जन्तु** रचनाएँ भी रहती हैं!!

मछलियों की एक दुनिया है, **जानवरों** की एक दुनिया है, **पक्षियों** की एक दुनिया है, **किड़ों** की एक दुनिया है!

आइये हम किड़ों की दुनिया, और उनमें आइये हम **कॉकरोच प्रजाति** की दुनिया का उदाहरण लें:-

हर कोई कॉकरोच से घृणा करता है! सब को ये गंदे... लगते हैं!!!

लेकिन आइये आज हम **कॉकरोच की दुनिया** को देखें!

हाँ! उनका भी **व्यस्त** और दौड़ धुप की दुनिया है!

उनके पास भी अन्धेरे और गन्दी जगहों पर रहने का **घर** है!

क्या उनके पास **परिवार** नहीं --छोटे बच्चे? हाँ! उनके पास भी बच्चे - परिवार हैं! उनके पास भी **काम** हैं--भोजन इकठ्ठा करना है, व्यस्तता से भरा जीवन है!

है ना?

अब ये **कल्पना** करें की इस कॉकरोच की दुनिया को एक **बचाने वाला** और **उद्धारकर्ता** की जरूरत है!

और मानवजाति में से किसी को **अपनी इच्छा** से ये काम करना है कि **वो कॉकरोच में बदलकर** उनके बीच में बहुत सालों तक रहे और कॉकरोच के उद्धार के लिए बुरी मौत मरे ताकि उन्हें छुड़ौती मिल सके!

क्या इस कार्य के लिए आप तैयार होंगें?

कॉकरोच जिस अवस्था में रहते हैं, जैसे भोजन करते हैं और जिन जगहों पर रहते हैं, उनकी कल्पना करें -- केवल कल्पना करना ही कितना **घिनौना** लगता है!

लेकिन सिर्फ इसके बारे में सोचें!

अभी के समय में मनुष्य पाप के मार्गों में होने के कारण बिल्कुल इसी अवस्था में लगता है, खासकर जब मनुष्यों की पापी अवस्था को स्वर्गीय लोग या यीशु देखें!

हाँ, बिल्कुल कॉकरोच के जैसा!!

अहा! क्या उद्धारकर्ता हैं!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

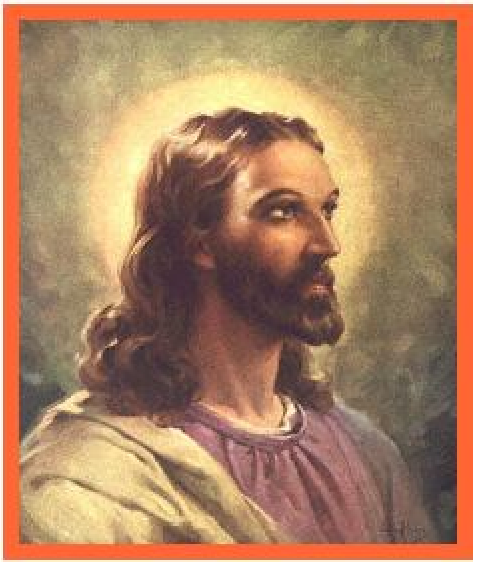

आप खुद के प्रतिदिन **गरीब** होने की कल्पना करें!!

सोचें आपको अपनी पसन्द का **भोजन** न मिले...

...या अपनी पसन्द के **कपड़े** ना पहन पाएं या जूते अपनी पसन्द के ना पहन पाएं

... या जहाँ **जाना** चाहते हैं न जा पाएं

... या **बस्ती में रहना पड़े**!

ऐसा ही **कुछ हमारे** स्वामी यीशु **के साथ हुआ!**

इसलिए, ये परमेश्वर ही थे जिन्होनें पूरी मानवजाति के लिए छुड़ौती के रूप में अपने पुत्र को भेजा!

--"(एक) प्राण के बदले (एक) प्राण"

हम पूरी मानवजाति के **छुटकारे** और

छुड़ौती के <u>दिव्य लेन देन</u> के बारे में इन वचनों में पढ़ते हैं --

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

1 कुरिन्थियों 15:21 "क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया।

हाँ! **एक** मनुष्य द्वारा **सब** के ऊपर मृत्यु दण्ड आया और **एक** और मनुष्य द्वारा **सबके** लिये छुटकारा आया।

आइये अगले वचन में देखें की ये **दो मनुष्य** कौन हैं -

1 कुरिन्थियों 15:22 "और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे"।

यहाँ पर 'सब' कौन है?

क्यों! वे आदम के वंश हैं - **मानवजाति की पूरी दुनिया**!!

आज के समय में इनका अलग अलग नाम है -

हिन्दू, मुस्लिम, बुद्ध, जैन, ईसाई, नास्तिक आदि आदि।

हाँ! वास्तव में ये एक **सुसमाचार** है -

लुका 2:10 "बड़े आनंद का सुसमाचार... जो सब लोगों के लिये होगा..."

हाँ! इस वचन में सब लोगों का मतलब है आदम के **सारे** बच्चे!

हाँ! **कलवारी** की सूली पर यीशु की मृत्यु से **आशीष** और **लाभ** पाने के लिये सबकुछ जो जरूरी है कि आपको आदम की संतान होना है!

इस प्रकार से यह देखते कि सूली पर यीशु की मृत्यु **<u>पूरी मानवजाति</u>** जो कि "आदम" में है उनके लिये हुई थी।

आइये हमने पाठ के आरम्भ में जो वचन पढ़ा था उसपर फिर जाते हैं -

यूहन्ना 12:32 "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो <u>सब को अपने पास खीचूंगा</u>"।

हाँ! हमने आज देखा कि कैसे **यीशु** ने सूली पर मृत्यु द्वारा "**सबको अपने पास खिंचा**" या **उद्धार दिलाया** या **सब मनुष्यों को बचाया** - किससे?

- मृत्युदण्ड से ।

और परमेश्वर के उचित समय में मरे हुओं में से पुनरुत्थान की **सच्ची आशा** के लिये अपने लहू से **पूरी मानवजाति** को खरीद लिया!

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

हाँ! मरे हुओं में से सबके लिये पुनरुत्थान है! आप ये सुसमाचार अपने सभी पड़ोसियों और मित्रों को जाकर कहें!

लेकिन ये **पुनरुत्थान** कैसे होगा ... और परिस्थितयां कैसी होंगी??

हाँ! इस **पाठ** में हमने **छुड़ौती** के **दाम** की पढ़ाई की...

जो कि पहला पाठ है बाईबल की पढाई "**क्रूस का रहस्य**" का।

अगले पाठ में हम **छुड़ौती के कार्यों** की पढ़ाई करेंगे!

हाँ! यीशु की **छुड़ौती** के बलिदान के **परिणाम** में जिन परिणामों को हमपर प्रगट किया जायेगा, उनके बारे में हम अगले पाठ में पढ़ेंगे।

---आमीन---

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com